काली जी की आरती

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े ।

पान-सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे ।

सुन जगदम्बे कर न विलम्बे, सन्तन  के भण्डार भरे ।

संतन-प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।

बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।

चरण-कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े।

जब-जब भीड़ पड़े भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे ।

गुरु-के बार सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।

माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे ।

सब सुखदायी सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करें।

ब्रह्मा, विष्णु, महेश फूल लिए, भेंट देन तेरे द्वार खड़े ।

अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे।

वार शनिश्चर कुंकुमवरणी, जब लूंकड़ पर हुकुम करे ।

खड़ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्तबीज को भस्म करे ।

शुम्भ-निशुम्भ क्षणहि में मारे, महिषासुर को पकड़ दले ।

अदित बारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे ।

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे ।

जब तुम देखो दयारूप हो, पल में संकट दूर टरे ।

सौम्य स्वभाव धर्यो मेरी माता, जन तन की अर्ज कबूल करे ।

सात बार की महिमा बरनी, सब गुण कौन बखान करे ।

सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे ।

दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध-साधक तेरी भेंट धरे ।

ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान करें।

इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती चंवर कुबेर डुलाय रहे

जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज्य करे ।

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in